प्रसार पुस्तिका संख्याः- DEE/2021/09

बैक यार्ड मुर्गीपालन हेतु मुफ्त आहार व्यवस्था

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
BIHAR ANIMAL SCIENCES UNIVERSITY

प्रसार शिक्षा निदेशालय
बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-14

बैक यार्ड मुर्गीपालन हेतु मुफ्त आहार व्यवस्था

बिहार के ग्रामीण क्षेत्रों में बैक यार्ड मुर्गीपालन (Backyard Poultry) बहुत ही पुराना है। इसमें ज्यादातर किसान देशी मुर्गियों का चयन करते हैं। बैक यार्ड मुर्गीपालन खुले स्थान, घर के पिछवाडे या आंगन में किया जाता ह। मुर्गियॉ बचा हुआ खाना, साग–सब्जी एवं कीडा मकौड़ा खा कर अपना पालन–पोषण करती है । किसी प्रकार की विशेष आवास की आवश्यकता नहीं होती है। इस तरह के मुर्गियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता ब्रॉयलर (Broiler) एवं (Layer) से ज्यादा होती है। ग्रामीण क्षेत्रों की अण्डे एवं मांस को घर के पिछवाड़े मुर्गीपालन से पूरा किया जा सकता है ।

बैक यार्ड मुर्गी के प्रजाति : ग्राम प्रिया (Grampriya) तथा वनराजा (Vanraja) उन्नत किस्में हैं। इन प्रजातियों को अण्डा और मांस दोनों के लिए पाला जाता है। पौष्टिकता एवं स्वाद में इसके अण्डे एवं मांस देसी मुर्गी के समान होता है। इस प्रजाति के मुर्गियों का वजन आठ सप्ताह में 1.3 किलोग्राम हो जाता है। अण्डे का रंग भूरा होता है एवं अण्डा वजनदार होता है ।(सारिणी–1)

सारिणीः– 1 तुलनात्मक वजन व उत्पादन :–

	वनराजा	ग्राम प्रिया	देशी मुर्गी
चूजा/ मुर्गा	**वजन (Body Weight) ग्राम में**		
एक दिन का चूजा	34	36	25
6 सप्ताह	301	305	205
8 सप्ताह	1100	1200	450
40 सप्ताह	3400	3400	906
	अंडे का वजन (ग्राम में)		
28 सप्ताह में	42	45	24
40 सप्ताह में	55	55	32
उम्र पहले अंडे देने का	**130 दिन**	**140 दिन**	**220**
	अंडे का उत्पादन		
280 दिन	66	66	12
500 दिन	180	180	46
ड्रेस्ट वजन %	72	72	64

आहार : बैक यार्ड मुर्गी पालन मे उपर से दाने (Supplemental Feed) खिलाने की आवश्यकता ब्रॉयलर और लेयर मुर्गीयों की तुलना मे काफी कम पड़ता है। पक्षियों को मिश्रित प्रकार का अनाज खिलाना चाहिये और प्रयास करना चाहिये कि संतुलित आहार के रूप में उन्हें प्रोटीन, मिनरल एवं विटामिन मिश्रण भी देना चाहिये। शाम के समय 30–40 ग्राम दाना प्रति दिन देना उचित रहता है।(सारिणी–2)

मुर्गियो में होनेवाली सामान्य बीमारियॉ एवं उनके उपचार:–

I. कोराइजा (Coryza): यह बीमारी हिमोफिलस पारागैलिनेरम (**Heamophilus Paragallinarum**) से होता है जिसका लक्षण मुर्गियों में छींकना, सॉस लेते समय घरघराहट की आवाज, मुँह खोलकर सांस लेना, नाक से पानी आना, मुर्गियों में मृत्युदर होना, ऑखों में सूजन एवं

किच आना, संक्रमित मुर्गियों के नाक पर लकड़ी का बुरादा या फीड लगा होना। इसके उपचार के लिए सिपरोफ्लक्सासीन या क्लोरमफेनीकोल 5 ग्राम सुबह शाम 200 चूजों के लिए 5 लीटर पानी में घोल कर 3 से 5 दिन तक दे।

ii. सी.आर. डी. (CRD): यह बिमारी माईकाप्लाज्मा गैलीसेप्टिकम **(Mycoplasmagalisepticum)** से होता है जिसका मुख्य लक्षण कोराइजा जैसे ही है। ये छोटे चूजों में ज्यादा होता है एवं जाड़े के मौसम में ज्यादा पाया जाता है। इसके उपचाार के लिए एनरोफोलक्सासीन (Enrofloxacine) या ओक्सीटेटसाइक्लीन (Oxytetcycline) 5 ग्राम सुबह शाम 200 चूजों के लिए 5 लीटर पानी में घोलकर 3 से 5 दिन तक दें।

iii. सफेद दस्त : यह बिमारी सालमोनेला **(Salmonalla)** के संक्रमण से होता है। यह दूसरे से तीसरे सप्ताह के चूजां में होता है। मुर्गियों में इसका लक्षण सफेद दस्त होना, मुर्गियों का पंख भींगना मुर्गियों का एक एक दूसरे से सट कर रहना, उपचार हेतु एनसेफोलक्सासीन या ओकसीटेटसाइकलीन 5 ग्राम सुबह शाम 200 चूजों के लिए 5 लीटर पानी में घोलकर 3 से 5 दिन तक दें।

सारिणीः– 2 मुर्गियों में उम्र के अनुसार दाने व पानी की मात्रा :–

उम्र (सप्ताह)	दाने की मात्रा gm/ chick/day	पानी की मात्रा (लीटर में 100 मुर्गियों के लिए	तापमान °F
1	5	2	90° F
2	10	3.5	90° F
3	20	5.5	90° F
4	25	7.5	90° F
5	40	9.5	90° F
6	61	10.5	90° F
7	81	12	90° F
8	110	13.5	90° F

सर्दी के दिनों में मुर्गियों का रख–रखाव: सर्दी के दिनों में वातावरण का तापमान काफी कम रहता है जिसके चलते मुर्गियों के शरीर के तापमान का ह्रास तेजी से होता है और मुर्गियों में मृत्युदर बढ़ जाती है। बाहर से ठंढ़ी हवा घर के अन्दर न आये इसके लिए घर के चारों ओर (जहॉ जाली हो) जूट के बैग का पर्दा उपर से 5 इंच जगह छोड़ कर लगा दें। घर के अंदर का तापमान अगर निम्नतर तापमान (70° F) से कम हो तो घर के अंदर का तापमान बढ़ाने के लिए गैस,हीटर, लैम्प इत्यादि का उपयोग करना चाहिए।

गर्मी के दिनों में मुर्गियों का रख–रखाव : गर्मी के दिनों मे वातावरण का तापमान अधिक रहता है जिसके वजह से मुर्गियो में हीटस्ट्रोक (लू लगना) और मृत्युदर बढ़ जाती है। घर इस तरह का बना हो जिसमें हवा का आगमन एवं निकास की समुचित व्यवस्था हो,मुर्गियों को स्वच्छ एवं ठंडे पानी में ग्लुकाज एव इलेक्ट्राल मिलाकर पिलायें, इससे मुर्गियों में **Dehydration** तथा तनाव को रोका जा सकता है। गर्मी के दिनों में **(Vitamin B Complex)** की मात्रा के 20 से 40% तक बढ़ा देना चाहिए।

बरसात के दिनों में मुर्गियों का रख – रखाव : बरसात के दिनों मे मुर्गीपालकों को उनके घर का विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि इस समय वातावरण में काफी नमी होती है तथा उमस भरा दिन होता है। इसके साथ ही इस समय मुर्गियों में मृत्यु दर बढ़ जाती है । बरसात आने कं पहले घर का मरम्मत अच्छी तरह से करा ले ताकि बरसाती पानी घर के अन्दर न आये ।

आर्थिक विश्लेषण :– दो सौ मुर्गी आंगन बाड़ी में वैज्ञानिक विधि द्वारा उन्नत प्रजाति(ग्राम प्रिया, वनराजा) पालने से 24,000–30,000 का लाभ होता है।

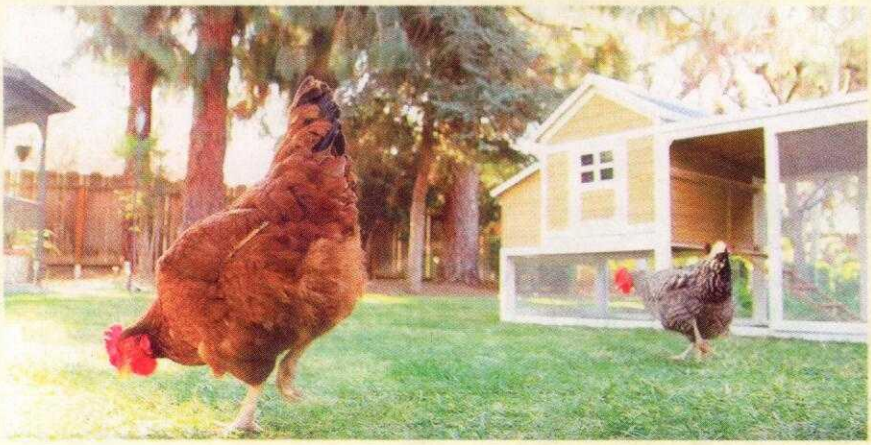

आलेख एवं प्रस्तुतिकरणः- पंकज कुमार सिंह, सरोज कुमार रजक, पुष्पेन्द्र कु0 सिंह

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

निदेशक,प्रसार शिक्षा

बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय,पटना-14

Email: deebasupatna@gmail.com (Official), dee-basu-bih@gov.in

Mob.: +91 94306 02962,+91 80847 79374

First Print: 7992457574/ March 2021